Topics - 11

पञ्चमी विभक्ति

पञ्चमी भयेन ।
चौराद् भयम् - चोर भयम् ।

पञ्चम्यन्त सुबन्त का भय
प्रातिपदिक के सुबन्त के ~~समास~~ साथ समास होता है और उस समास को 'तत्पुरुष' समास कहते हैं। उदाहरण के लिए 'चौराद् भयम्' (चोर से भय) में पञ्चम्यन्त सुबन्त 'चौराद्' का सुबन्त 'भय' के साथ समास होकर 'चौरभयम्' रूप बनता है।

अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरल्पशः ।
एतैः सहाल्पं पञ्चम्यन्तं समस्यते, स तत्पुरुषः । सुखापेतः । कल्पनापोढः । चक्रमुक्तः । स्वर्गपतितः । तरङ्गापत्रस्तः । अल्पशः किम् - प्रासादात्पतितः ।

स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन । स्तोकान्मुक्तः । अल्पान्मुक्तः । अन्तिकादागतः । अभ्याशादागतः । दूरादागतः । विप्रकृष्टादागतः । कृच्छ्रादागतः । पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः इत्यलुक् ।

स्तोक (थोड़ा) अन्तिक (समीप), दूरार्थवाचक (दूरी को अर्थ बताने वाला), और कृच्छ्र (कष्ट),

- इन चार प्रातिपदिकों के पञ्चम्यन्त सुबन्त का 'क्त' - ~~प्रत्ययान्त के~~ ~~से~~ पञ्चम्यन्त के सुबन्त के साथ समास होता है और इस समास को 'तत्पुरुष' कहते हैं। सभी के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं —

स्तोक - यहाँ 'स्तोकाद् मुक्तः (थोड़े से मुक्त) इस अर्थ में स्तोक ङसि मुक्त सु' में समास होकर प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सुपो धातु-० से सुप् - ङसि और 'सु' का लोप प्राप्त होता है, किन्तु आगामी सूत्र से पञ्चमी (ङसि) के विकल्प से उसका निषेध हो जाता है।